विषय - संस्कृत, बी० ए० स्नातक (प्रतिष्ठा)

तृतीय वर्ष, सप्तम पत्र
काव्यदीपिका - द्वितीयशिखा
लक्षणाविभाग।

डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा
दिनांक - 15।10।2020

'इत्येतं सा द्विविधा रूढिमूला प्रयोजनमूला च।
सेयं पुनर्द्विधा स्यादुपादानं लक्षणञ्चेति ॥5॥
उपादान लक्षणा, लक्षणलक्षणा चेति सा लक्षणा पुनर्द्विविधा।

उपादान लक्षणा

स्वसिद्धये पराऽऽक्षेपेऽसावुपादान लक्षणा ॥
वाच्यार्थस्य अन्वयसिद्ध्यर्थं लक्ष्यार्थस्य बोधने वाच्यार्थस्यापि उपादानादियमुपादान-लक्षणा। यथा- "यष्टयः प्रविशन्ति" इत्यत्र यष्टीनां स्वतः प्रवेशक्रियया ऽन्वयासम्भवात् प्रवेशान्वयार्थं स्वसंयोगिनः पुरुषा आक्षिप्यन्ते। अत्र च स्वार्थस्यापरित्यागात् इयम् "अजहत्स्वार्था" इति च कथ्यते।

लक्षणलक्षणा

परार्थमात्रबोधे तु भवेल्लक्षण लक्षणा ॥6॥
सर्वथा स्वार्थपरित्यागेनान्यार्थमात्रबोधने इयं लक्षणलक्षणा। अत एवासौ "जहत्-स्वार्था" इति च भण्यते। यथा पूर्वोदाहृते - "उपकृतं बहु तत्र" इत्यादौ।

अर्थ-

श्रीकान्तिचन्द्र भट्टाचार्य लक्षणा का

स्वरूप बताने के बाद अब लक्षणा विभाग का वर्णन करते हुए कहते हैं- रूढ़िमूला और प्रयोजनमूला इस प्रकार यह लक्षणा दो प्रकार की हुई। पुनः उपादानलक्षणा और लक्षणलक्षणा इसप्रकार से इस लक्षणा के दो भेद होते हैं।

उपादान लक्षणा-

अपनी सिद्धि के लिए दूसरे अर्थ का आक्षेप-बोध-कराने में जिस लक्षणा का उपयोग होता है वह उपादान-लक्षणा है।

वाच्य अर्थ के अन्वय की सिद्धि के लिए लक्ष्यार्थ का बोध कराने में वाच्य अर्थ का भी उपादान-ग्रहण होने से यह लक्षणा उपादान लक्षणा कहलाती है। जैसे- "यष्टियाँ प्रवेश करती हैं" यहाँ यष्टियों का स्वतन्त्र रूप से प्रवेशन क्रिया के साथ अन्वय असम्भव है, अतः प्रवेशन क्रिया में उनका अन्वय कराने के लिए यष्टि-संयोगी-यष्टिधारी-पुरुषों का आक्षेप किया जाता है। स्वार्थ का त्याग न होने से इस लक्षणा को 'अजहत्स्वार्था' भी कहते हैं।

लक्षणलक्षणा-

शक्यार्थरहित केवल परार्थ का बोध कराने में जिस लक्षणा का

उपयोग होता है वह 'लक्षणलक्षणा' है।

स्वार्थ का एकदम त्याग करके केवल अन्यार्थ का ज्ञान कराने में जो लक्षणा होती है, उसे 'लक्षणलक्षणा' कहते हैं। इसीलिए इसे 'जहत्स्वार्था' भी कहते हैं। पूर्वोदाहृत 'उपकृतं बहु तत्र' इत्यादि पद्य में लक्षणलक्षणा समझना चाहिए ॥ इति ॥

Scanned with CamScanner